शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में कुटुम्बीय नारी

कंचन बाला (शोधार्थी)
चौ.बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर. राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

नारी ईश्वर की अनुपम कृति है। संसार के समस्त जड़ व चेतन में उसका अस्तित्व है। भारतीय संस्कृति में नारी को सदैव सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित किया है तथा उसे देवी स्वरूपा माना गया है। प्राचीन भारतीय सभ्यता में भी मातृ-सत्तात्मक परिवार की अवधारणा के चिह्न मिले हैं, जो उक्त बात का समर्थन करते नजर आते हैं। नारी परिवार की धुरी है। वह विभिन्न सम्बन्धों के माध्यम से अपने कत्र्तव्यों का निर्वहन करते हुए परिवार को बाँधकर रखती हैं व पुरूष को प्रोत्साहन, संवर्द्धन और शक्ति प्रदान करती है। बदलते युग व पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव स्वरूप नारी ने स्वयं को बदला है। अब वह अबला न होकर अपने स्वाभिमान और आत्म-निर्भरता के बल पर सबला बन गई है। वर्तमान में वह अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है, फलस्वरूप उसके विचारों में भी उत्तरोत्तर परिवर्तन आया है। वह आधुनिकता के नाम पर अपने संस्कारों से विमुख होती जा रही है। शशिप्रभा शास्त्री ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी के विविध रूपों में परम्परागत व आधुनिक विचारों का अद्भुत समन्वय दिखाया है। अपने कर्तव्यों से विमुख हो चुकी नारी को पुनः अपने मूल रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों का केन्द्र बिन्दु नारी को बनाया है व उसके द्वारा विभिन्न सम्बन्धों के निर्वहन में उसकी सार्थकता को उजागर किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में कुटुम्बीय नारी के विविध रूपों को प्रस्तुत किया गया है।

शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में कुटुम्बीय नारी

नारी ईश्वर की अतुल्य रचना है। संसार के पंच तत्वों में उसकी उपस्थिति है अर्थात् दृश्य व अदृश्य संसार में वह मौजूद है। वह साहित्य में है, संगीत में है, कला में है। पुरूष के जीवन में अमृतमयी सरिता के समान बहकर उसे तृप्ति व जीवन की सम्पूर्णता प्रदान करती है। मनुस्मृति में 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता' की उद्घोषणा ने नारी को न केवल सर्वोच्च स्थान दिया बल्कि उसे सृष्टि सृजन का मूलाधार भी माना है। नारी अपने विभिन्न रूपों जैसे - माँ, बेटी, पत्नी, बहन, बहू में अपने कर्तव्यों को निभाते हुए सदैव अपनी महत्ता को प्रतिपादित किया है।

पाश्चात्य विद्वान लावेल ने नारी की ऊत्तमता को सृष्टि की उत्तमता से जोड़ते हुए लिखा Earth's noblest thing is a women perfect तो महाकवि प्रसाद ने 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' कहकर उसे श्रद्धा के पूज्य भाव पर प्रतिष्ठित किया।

भारतीय समाज में नारी परिवार की धुरी है। उसने अपने विविध रूपों में पुरूष को प्रोत्साहन, संवर्द्धन तथा शक्ति प्रदान की है। वह परिवार में माँ के रूप में जन्मदात्री व पोषण करने वाली व कभी प्रेम व स्नेह से सराबोर करने वाली पत्नी रूप में और कभी घर के आँगन की रौनक बन बेटी के रूप में सामने आती है। वस्तुतः परिवार में ही स्त्री के अनेक रूप देखने को मिल जाते हैं। वह अपने विविध रूपों में कर्तव्य पथ पर अग्रसर

हो समाज में सम्मानजनक स्थान प्रदान करती है।

वेदों, पुराणों, उपनिषदों सहित प्राचीन एवं आधुनिक साहित्य में नारी को केन्द्रीय भूमिका में स्थान दिया। डॉ. गजानन्द शर्मा के अनुसार "कार्यों, रूपों और परिस्थितियों के अनुसार नारी के अनेक रूप भारतीय साहित्य में प्रचलित हैं, जिसमें नारी के विभिन्न स्वरूपों का बोध होता है, किन्तु नर के धर्म वाली या नर से सम्बन्ध होने के कारण नारी नाम पड़ा।"1

भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् हिन्दी कथा साहित्य की समस्त विधाओं में सर्वाधिक लोकप्रियता उपन्यास को मिली, जिसमें नारी प्रधान उपन्यासों को विशेष ख्याति प्राप्त हुई। इनमें नारी के त्याग, स्वाभिमान, अधिकारचेतना एवं कर्तव्य रूप को प्रतिष्ठित किया गया है, परन्तु उत्तर आधुनिकता के दौर में आज की नारी अपने अस्तित्ववादी चेतना की आड़ में स्वच्छन्द होकर विवाह जैसी संस्था को नकारने लगी है और कुटुम्बीय एकत्व, कुटुम्बीय संस्था को दरकिनार कर समाज को खण्डित करने में अपरोक्ष रूप से योगदान दे रही है। ऐसे अति आधुनिकतावादी व गैर उत्तरदायित्ववादी युग में अनेक महिला रचनाकार स्खलित होते नारी मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास कर रही हैं, जिनमें शशिप्रभा शास्त्री महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। जहाँ एक ओर ऐसी महिला रचनाकारों की भीड़ उभर आई है जो नारी विमर्श के नाम पर नारी के प्रेम, वात्सल्य, त्याग, माँ, बहिन, पत्नी की युगों-युगों की पारम्परिक मूल्यवर्ती वाली मूर्ति खण्डित करने में लगी है वहीं शशिप्रभा शास्त्री ने खण्डित होती इस मूल्यवर्ती नारी प्रतिमा को अपने उपन्यासों के माध्यम से पुनः सृजित किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी के विविध रूपों का सफल चित्रण किया है। वह परिवार में माँ, बेटी, पत्नी, बहन आदि अनेक सूत्रों को धारण करती है। नारी जीवन की सार्थकता भी इन सम्बन्धों के निर्वहन में मानी जाती है। इन विभिन्न सम्बन्धों के माध्यम से उपन्यासों की नारी पात्रों की स्थिति और गति को समझा जा सकता है। शास्त्री जी के उपन्यासों का केन्द्रीय विषय वस्तु नारी है जिसमें नारी की अनेक भूमिकाओं का चित्रण किया गया है।

1. माँ रूप में

माँ वह एक सुखद अनुभूति है जो अपने ममता के शीतल आँचल में संतान के दुःख, तकलीफ की तपिश को ढक लेती है। जीवन की प्रत्येक परिस्थितियों में लड़ने की ताकत देती है। माँ शब्द की गहराई और विशालता को परिभाषित करना सम्भव नहीं है, क्योंकि इस शब्द में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, सृष्टि की उत्पत्ति का रहस्य समाया है। भारतीय संस्कृति में जननी और मातृभूमि दोनों को ही माँ का दर्जा दिया गया है। नारी के विविध रूपों में माँ का रूप सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं गौरवशाली है। संतान को जन्म देकर उसका पालन-पोषण करना और हर स्थिति में उसकी मंगलकामना ही मातृत्व की पहचान है। शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में हमें 'माँ' के दो रूप दृष्टिगत होते हैं - प्रथम रूप में वह परम्परागत, रूढ़िवाद व पितृसत्ता की परिपोषक है तथा दूसरे रूप में आधुनिक, प्रगतिशील, उदार एवं सुलझी मानसिकता की पोषक है।

'कर्क रेखा' उपन्यास में तनु के माँ बनने अनुभूति इस प्रकार प्रकट की है, '"पहली बार माँ बनकर कैसा नया-सा लगता है। नारी कली से फूल बनती है और उसके तन-मन पर निखार छा जाता है।"2 माँ के स्नेहिल व्यवहार का एक

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उदाहरण 'अमलतास' उपन्यास में देखा जा सकता है। जब कामदा शादी के बाद प्रथम बार अपने मायके आती है तो "कामदा को माँ ने देखा तो लपककर झोली भर ली। हर्ष और स्नेह से आँखे छलछला आई।"3

'नावें' उपन्यास में रूढ़िवादी व परम्परागत विचारों वाली माँ के दर्शन होते हैं। जब मालती अविवाहित गर्भवती हो जाती है तो उसकी माँ उसे बेइज्जत कर घर से निकाल देती है, "निकल जा, काला मुँह कर, इससे पहले कि छोटे-छोटे बच्चे उठें...।"4 'ये छोटे महायुद्ध' उपन्यास में लोपा की माँ गार्गी देवी शिक्षित व विदुषी होने पर भी अत्यधिक अनुशासन प्रिय और रूढ़िवादी है। "बिगाड़ों बच्चों को जितना बिगाड़ना चाहती हो। एक तो म्लेच्छ भाषा (अंग्रेजी) मलेच्छ खाना (पेस्ट्री, चाकलेट, ब्रेड) खा-खाकर वे उसी तरह के तामसी विचारों वाले बनते जा रहे हैं।"5

आधुनिक विचारों वाली माँ के रूप में 'नावें' उपन्यास की तनु सामने आई है, जो अविवाहित गर्भवती होने पर भी सोचती है कि "ईश्वर की दी हुई नियामत को, अपनी कोख के वरदान को, नष्ट मैं क्यों होने देती, होने पर नहीं दूंगी।"6 'परछाइयों के पीछे' उपन्यास की सुमित्रा स्वयं आत्मनिर्भर है, परन्तु वह असफल व तनावग्रस्त दाम्पत्य से त्रस्त है। फिर भी माँ के रूप में बच्चों का ख्याल उसे दिन-रात कचोटता है। 'परसों के बाद' उपन्यास में माधवी स्वयं नौकरी के कारण बेटी से दूर रहती है परन्तु अपने वात्सल्य प्रेम के कारण वह उससे जुड़ी रहती है।

2. बेटी रूप में

भारतीय संस्कृति में बेटी का जन्म लक्ष्मी का आगमन माना जाता है, जिससे घर की सुख, समृद्धि व खुशहाली में वृद्धि होती है-

"चलती फिरती लक्ष्मी, घर आँगन की शान।
होती जिस घर बेटियाँ उसका तीर्थ जहान।।"7

आधुनिक काल में शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन व आधुनिकता ने आज की बेटियों को नई दिशा दी है। आज की बेटी परम्परागत व आधुनिक मूल्यों के बीच समन्वय स्थापित कर अपने कर्तव्यों को पूर्ण करती है। शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में वह सुयोग्य, कर्मठ एवं ममत्वशाली पुत्रियों के रूप में चित्रित है। 'नावें' उपन्यास में मालती के पिता की स्वीकारोक्ति "बेटी! मैं तो तेरे बिना बिल्कुल अपाहिज हो गया था। अपाहिज तो पहले से ही था, अब तो टूट गया।"8

बेटियाँ अपनी माँ के साथ-साथ पिता से भी भावात्मक रूप से गहरे से जुड़ी होती हैं। 'हर दिन इतिहास' उपन्यास की वर्तिका अपने पिता से बेहद प्रेम करती है। "बाबूजी मुझे कितना प्यार करते हैं। वह शायद गुड़िया के लिए नहीं रो रही थी ... वर्तिका भी अपने रोने का कारण नहीं समझ पा रही थी, बाबूजी उसे अच्छे लगते हैं, तो कहीं वह उसक हाथ का स्पर्श पाने के लिए ही तो नहीं रो रही थी।"9 वर्तिका अपने पिता की मृत्यु के बाद अपने भाइयों को संभालती है और उनके प्रति अपनी समस्त जिम्मेदारियों का निर्वहन करती है।

'कर्क रेखा' उपन्यास में तनु के पिता मतकमाऊ होने व कर्कशा पत्नी से त्रस्त होने के बावजूद अपनी बेटी की सभी तकलीफों में विशेष सहानुभूति रखते हैं। वे अपनी पत्नी को फटकारते हुए कहते हैं "क्या बेकार की वाहियात बातें करती रहती हो! बेटी को रूलाने में ही कुछ मजा आता है तुम्हें! चार दिन को आयी है तो ...।"10

'नावें' उपन्यास में नीलू अपनी माँ मालती व सौतेले पिता विजयेश के सुखद जीवन की कामना करती है और अपनी माँ से प्रार्थना करती है, "अब अपने लिए न सही सिर्फ अप्पा जी की

खातिर ही, उनके प्रति अब तक के अपने व्यवहार के प्रायश्चित स्वरूप ही, तुम एक नई जिन्दगी की शुरूआत करोगी।"11

बेटी का रिश्ता माँ-बाप के लिए बहुत ही मधुर और कोमल होता है तथा वह उनके प्रति उत्तरदायित्व का भाव रखती है। माता-पिता की पीड़ा से बेटी का हृदय कई गुना अधिक पीड़ित हो जाता है। 'उम्र एक गलियारे की' उपन्यास की सुनंदा की अपने पिता के प्रति चिन्ता इसी को व्यक्त करता है, "न जाने कितने दिन से बीमार होंगे। अब तार से खबर करवा रहे हैं अलबत्ता, पर वैसे तो वो अकेले ही हैं, कौन कर रहा होगा उनकी देखभाल ?"12

3. पत्नी रूप में

विवाह एक पवित्र संस्कार माना जाता है, जिसके उपरान्त ही नर-नारी पति-पत्नी के रूप में गृहस्थ जीवन प्रारम्भ करते हैं। पति-पत्नी ही गृहस्थी की धुरी हैं। हिन्दू धर्म में पत्नी को वामांगी अर्थात् पति के शरीर का बायां हिस्सा व अर्धांगिनी अर्थात् पति के शरीर का आधा अंग कहा जाता है। सार-स्वरूप कहा जा सकता है कि पत्नी के बिना पति अधूरा है।

डॉ.शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में वर्णित सभी पत्नियाँ अपने दायित्व का निर्वाह पूरी ईमानदारी से करती हैं, पर जब शोषण असहनीय हो जाता है तो इसका विरोध भी करती हैं। पत्नी अपने पति को सदैव स्वस्थ व खुश देखना चाहती है, जिसके लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील रहती है। 'अमलतास' उपन्यास में दीवान साहब के बीमार हो जाने पर उनकी पत्नी बड़ी सरकार का मन उनके लिए विचलित हो उठता है, "बड़ी सरकार की आँखों की बरौनियों में आँसू झूल आए, पति की स्वास्थ्य कामना करती हुई वे मंत्रमुग्धसी प्रतिमा के आगे चुपचाप बैठी रही।"13

'उम्र एक गलियारे की' उपन्यास की सुनंदा भी पति के बारे में ही सोचती है। "नवल के आने से पहले कुछ बना लूँ तो ठीक रहेगा, नवल को न जाने कौन-सी दाल पसन्द है।"14

आज पत्नी आर्थिक रूप से भी आत्मनिर्भर बन पति से कदमताल मिलाकर चलने लगी है। 'कर्क रेखा' उपन्यास में तनु अपने पति से कहती है, "मैं अपने बारे में भी सोचती हूँ कि मुझे भी एप्लाई कर देना चाहिए। अगर मुझे भी सर्विस मिल जाए तो काफी आराम से चलेगा।"15

'परछाइयों के पीछे' उपन्यास की सुमित्रा एक परम्परागत सहनशील भारतीय पत्नी का प्रतिनिधित्व करती है जो निरन्तर पति के अत्याचार सहकर भी शान्त व मूक बनी रहती है तथा पति के साथ ही रहना चाहती है, वहीं अमलतास उपन्यास की नायिका कामदा अपने पर किए अत्याचार का बदला लेती है। कामदा के पति ने किसी दूसरी औरत के लिए उसे घर से निकाल दिया और अन्त में उसकी शरण में आया तो कामदा ने साफ शब्दों में उससे कहा था कि "मैं अब आपकी ब्याहता पत्नी नहीं हूँ, परित्यक्ता हूँ। ब्याहता को आप कौड़ी को तरसाये, पर परित्यक्ता तो आपसे लड़कर अपना हिस्सा ले लेगी।"16

4. बहन रूप में

रिश्ते तो कई होते हैं पर उनमें बहन का रिश्ता बेहद खास होता है जो मन में भावभीना अहसास जगाता है। बहन के व्यक्तित्व में माँ व बेटी के भावों का समाहार देखा जा सकता है। बहन बड़ी होने पर अपने छोटे भाई-बहनों पर माँ जैसा ममत्व रखती है और छोटी होने पर बच्ची के समान मचल भी उठती है।

बहन अपने भाई-बहनों को हमेशा भला चाहती है। 'कर्क रेखा' उपन्यास में जब तनु के भाई की

नौकरी लखनऊ में लग जाती है तो उसके माता-पिता भी उसके साथ जाने की सोचते हैं तो तनु मना नहीं करती। "उसने माँ के समर्थन में यही कहा कि उन्हें प्रहलाद को अकेला नहीं छोड़ना चाहिए, आखिर उसकी इतनी बड़ी पढ़ाई क्या दुकान चलाने के लिए की थी।'19

'हर दिन इतिहास' उपन्यास की वर्तिका अपने पिता की मृत्यु के बाद अपने भाइयों के भविष्य को लेकर चिन्तित रहती है। उनके लिए वह अपने विवाह के बारे में भी नहीं सोचती है। "छोटा रमेश भी अबोध ही है। बी.एससी. कर लिया है, पर व्यापार व्यवसाय में उसकी रूचि नहीं है। वह नौकरी करना चाहता है, पर बी.एससी. पास को नौकरी कौन देगा। उसका मनचाहा हो जाए तो फिर उसकी शादी भी करनी जरूरी होगा। पिताजी के न होने के कारण यह सब जिम्मेदारियाँ मेरी ही है।"18

बहन के रिश्ते में प्रेमपूर्वक जुड़ाव होता है। उसके साथ मन ही प्रत्येक बात साझी की जा सकती है। 'उम्र एक गलियारे की' उपन्यास में सुनंदा देवकी के घर जाती है तो वह उस दिन क्लिनिक नहीं जाती है और सुधीर से कहती है, "आप आज अकेले अस्पताल चले जाएँ, मैं कुछ देर सुन्नी की साथ रहूँगी, जब से आई है एक बात भी नहीं कर पाई हूँ ..."19

5. बहू रूप में

एक लड़की शादी के बाद नए घर में पति की पत्नी के साथ ही परिवार की बहू के रूप में पदार्पण करती है। प्रत्येक परिवार अपने लिए सभ्य, सुशील और संस्कारवान बहू की कामना करता है। उसके आगमन से ही घर में खुशी और उल्लास का माहौल छा जाता है, "बहू के पहुँचते ही देखने आने वालों का ताँता लग गया था। जो आता, बहू की मुँह भर-भरकर तारीफ करता ...."20 'कर्क रेखा' उपन्यास में तनु के प्रथम बार ससुराल पहुँचने पर ऐसा ही माहौल छा जाता है। बहू से अपेक्षा की जाती है कि वह परिवार को अच्छी तरह संभाल ले और ससुराल वालों की कसौटी पर खरी उतरे। 'कर्क रेखा' उपन्यास में तनु की माँ कहती है "पर लड़के का भविष्य भी देखना पड़ता है। कभी अकेला रहा भी नहीं है। बहू आ जाती तो मैं तो सच कहती हूँ, उधर मुँह भी नहीं करती।"21

'खामोश होते सवाल' उपन्यास में अनुराधा एक संस्कारवान बहू के रूप में चित्रित है। वह अपने ससुर की बहुत सेवा करती है तभी सेठ रूपचंद अपने अन्तिम समय में कहते हैं, "बेटे, मेरा दाह-संस्कार मेरा यह बेटा करेगा।"22

6. नारी विविध रूपों में

उक्त महत्वपूर्ण नारी सम्बन्धों के अलावा शशिप्रभा शास्त्री ने नारी के अन्य रूपों जैसे - सखि, प्रेयसी, सास, मौसी, बुआ जैसे सम्बन्धों को भी अपने उपन्यासों में शिद्दत से उकेरा है। शास्त्री जी के उक्त तमाम स्त्री पात्र वसुदैव कुटुम्बीय संस्कारों से ओत-प्रोत है जो कुटुम्ब रूपी संस्था को जोड़ने में आधुनिक समाज को प्रेरित करते है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शशिप्रभा शास्त्री ने अपने उपन्यासों में कुटुम्बीय नारी के विविध सम्बन्धों को कुशलता से चित्रित किया है। इन सम्बन्धों के माध्यमसे नारी की सामाजिक व नैतिक स्थिति को न केवल उजागर किया है बल्कि से दृढ़ता भी प्रदान की है। वे नारी मन की कुशल चितेरी है। इसलिए उन्होंने जमीन से जुड़े नारी के विविध सम्बन्धों का चित्रण किया है, साथ ही वे नारी के आत्मनिर्भर होने पर बल

देती है। नारी की महत्ता को निम्न शब्दों के माध्यम से समझा जा सकता है '

''नारी जग का मूल है, नारी से संसार।
नारी जीवन दायिनी, पूजो बारम्बार।।
नारी घर की आन है, नारी घर की शान।
नारी बिन घर-घर नहीं, नारी है वरदान।।
नारी से जन्मा पुरूष, नारी है पहचान।
पत्नी बन संतान दी, नारी वृक्ष समान।।
नारी कोमल फूल-सी, नारी है बलवान।
वक्त पड़े दुर्गा बने थामे तीर कमान।।
नारी के अंतस बसे, रूप शील, गुण चार।
त्याग क्षमा गहना बने, नारी जग आधार।''24

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी, डॉ. गजानन्द शर्मा, पृष्ठ 122
2 कर्क रेखा - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 94
3 अमलतास - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 18
4 नावें - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 30
5 ये छोटे महायुद्ध - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 27
6 नावें - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 33
7 बेटी के दोहे, डॉ. मीनाक्षी कौशिक, 24 मार्च, 2017
8 नावें - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 29
9 हर दिन इतिहास - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 6
10 कर्क रेखा - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 78
11 नावें - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 147
12 उम्र एक गलियारे की - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 227
13 अमलतास - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 55
14 उम्र एक गलियारे की - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 152
15 कर्क रेखा - शशिप्रभा शास्त्री, पृ. सं. 83
16 अमलतास - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 155
17 कर्क रेखा - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 137
18 हर दिन इतिहास - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 56
19 उम्र एक गलियारे की - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 126
20 कर्क रेखा - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 40
21 कर्क रेखा - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 137
22 खामोश होते सवाल - शशिप्रभा शास्त्री, पृष्ठ 215
23 Sahityapedia.com - नारी की महत्ता पर दोहे, डॉ. रजनी अग्रवाल 'वाग्देवी रत्ना', 8 मार्च, 2017